IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छोटे शहरों में महिला उद्यमिता विकास के क्षेत्र में चुनौतियां एवं समस्याएं

डॉ रेनू सिंह

सहायक प्राध्यापक गृहविज्ञान

राजकीय महिला महाविद्यालय झांसी

शोध सार

किसी भी देश के समग्र आर्थिक विकास के लिए महिलाओं का विकास सामाजिक व आर्थिक रूप से होना आवश्यक है आजकल हमारी बढ़ते सेवा क्षेत्र में विशेष रूप से महिलाओं के लिए कई उद्यमशीलता के अवसर प्रदान किए हैं जहां भी अपने नेतृत्व कौशल को बेहतर बना सकते हैं महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में अक्षत होने के पश्चात भी देखा जाए तो अभी भी महिलाओं को पुरुषों के लिए गौण होने एवं महिलाओं के प शाहिद कौशल को महत्वहीन आकने की प्रवृति आज भी पुरुष प्रधान समाज में बनी हुई है । जब हम महिला उधमिता शब्द के बारे में बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य वयवस्था से है जो व्यापार स्वामित्व ,व्यवसाय निर्माण का एक कार्य जो महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है उनकी आर्थिक स्थिति को भी उन्नत बनाने में ,समाज में स्थिति को स्थापित करने में सहायक होता है इसीलिए महिला उधमी अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में काफी प्रभाव डाल रही हैं जो सभी प्रकार के व्यवसाय का 25% से अधिक है।आज महिलाएं अधिक समृद्ध है।पुरुषों के साथ स्वयं की पहचान व्यक्त करने में सक्षम है परंतु कई अपवाद ऐसे भी हैं जहां महिलाएं पुरुषों के दिए गए सुझाव को सर्वोपरि समझती हैं। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य भारत में विभिन्न छोटे शहरों में महिला स्वामित्व के आर्थिक निर्धारकों को ज्ञात करना है उनके जोखिमों का अध्ययन करना है जो की व्यवस्था एक परिवार एक आर्थिक रूप में भी हो सकती है यह समस्याएं महिला उद्यमियों के विकास व्यवसायिक गतिविधियों को बाधित करते हैं

मुख्य बिंदु - महिला उद्यमिता, उद्यमिता, व्यवसाय, जोखिम, आर्थिक विकास।

प्रस्तावना

उद्यमी आर्थिक जीवन के असली नायक हैं।जिन्होंने सिद्ध करके दिखाया है कि प्रतिभा परिश्रम, मेहनत और बलिदान द्वारा सुव्यवस्थित रूप से किसी भी कार्य को करने में सफलता निश्चित ही प्राप्त की जा सकती है।प्रतिभा हो तो उपलब्ध संसाधनों को उचित रूप से प्रयोग में लाया जा सकता है। प्राकृतिक संसाधन केवल मनुष्य के श्रम से ही मूल्य प्राप्त करते हैं।उद्यमिता न तो विज्ञान है और न ही कला, यह एक अभ्यास है। ।उधमिता एक व्यक्ति या संबद्ध व्यक्तियों के समूह की उद्देश्य पूर्ण गतिविधि है। जो कि आर्थिक लाभ व प्रगति के लिए निर्धारित की जाती है। भारत एक विकासशील देश है जहां समानता का अधिकार स्त्री व पुरुष हेतु समान जीवन यापन हेतु निर्धारित किया गया है । अधिकारों की बात करें तो अभी अशिक्षित महिलाओं के अधिकारों के प्रति बात करने से पूर्व प्रशिक्षित महिलाओं को भी समान अधिकार और स्थिति प्राप्त करने के लिए एक लंबा रास्ता तय करना होगा। क्योंकि समाजशास्त्रीय व्यवस्था में आज भी पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था बनी हुई है। देश की आधी आबादी कहलाने वाली महिलाएं आज प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उत्कृष्ट उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। उधमशीलता की गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी महिला श्रम भागीदारी, आर्थिक दर को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रही है। जो कि वैश्विक संचार क्रांति का ही परिणाम है ।हालांकि अभी भी मंजिल बहुत दूर है। ।विभिन्न अनुसंधानों से पता चल रहा है कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या बहुत कम है ।भारत देश के विकास के प्रति निरंतर कार्य कर रहा है।जिसमें महत्वपूर्ण योगदान महिलाओं का भी शामिल है ।विकसित देशों की तुलना में भारत में महिला उद्यमिता का विकास बहुत कम है परंतु उनकी उपस्थिति में दिन-प्रतिदिन बढ़ोतरी हो रही है। निरंतर वृद्धि महिला उद्यमिता की प्रगति के प्रति आश्वस्त कराती है कि, यदि उन्हें सही मार्गदर्शन , मिले साथ ही उनके अधिकारों के प्रति उन्हें जागरूक किया जाए तो महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर आर्थिक विकास एवं सामाजिक प्रगति में योगदान दे सकती है ।

महिला उद्यमियों को किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए शक्तिशाली उपकरण के साथ-साथ समाज में प्रगति लाने वाले उत्प्रेरक के रूप में जाना जाता है ।महिलाओं पर दबाव व पारिवारिक दायित्वों होने के कारण महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा चुनौतियां को स्वीकार करने व कार्य को अधिक कौशल व प्रभावशाली ढंग से करने में सक्षम होती है।

महिला उद्यमिता के क्षेत्र को व्यापक बनाने और महिलाओं को इस ओर उन्मुख करने के लिए भारत सरकार द्वारा प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56) में नीति योजना द्वारा महिला कल्याण कार्यक्रम की ओर ध्यान केंद्रित किया गया था ।परंतु सर्वाधिक महिला उत्थान व कल्याणकारी कार्य पंचम पंचवर्षीय योजना (1974-79)में विशेषकर महिला उद्यमिता योजनाओं व कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया गया था। कुछ कर गुजरने की भावना उस देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है जो कि महिलाओं के योगदान द्वारा ही संभव है।

अध्ययन की आवश्यकता

महिलाएं आर्थिक विकास के लिए तेजी से उद्यमशीलता की तलाश कर रही हैं। जिसमें विभिन्न सरकारी और अर्ध-सरकारी संगठन महिलाओं को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजनों से महिलाओं की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और इससे भी ज्यादा बढ़ने की उम्मीद है।

उधमिता के क्षेत्र में महिलाओं के योगदान को विभिन्न वर्गों में हम वर्गीकृत कर सकते हैं । महिला उद्यमियों की श्रेणियों को श्रेणीबद्ध करके सरलतापूर्वक समझा जा सकता है।

- शिक्षित महिला उद्यमी
- अशिक्षित महिला उद्यमी
- स्तर की तकनीकी और व्यवसायिक योग्यता रखने वाली महिला उद्यमी
- संगठित असंगठित क्षेत्र में महिलाएं
- पारंपरिक एवं आधुनिक उद्योगों में महिलाएं
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं
- आर्थिक रूप से कमजोर महिलाएं
- उत्तम वित्तीय स्थिति महिला उद्यमी
- पारिवारिक व्यवसाय में संलग्न महिलाएं

हालांकि कुछ शोधों से संकेत मिलता है कि पारंपरिक और बदलते मूल्यों के दबाव के कारण कई महिलाएं उद्यमी बन रही हैं, खासकर मध्यम वर्ग की महिलाएं। कहावत है कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है। स्वयं की पहचान बनाने, आत्मनिर्भर कारकों के तहत, महिला उद्यमी कुछ नया करने और एक स्वतंत्र व्यवसाय के लिए एक साहसिक कार्य के रूप में, एक चुनौती के रूप में एक रोजगार का चुनाव करती हैं। जबकि पारिवारिक दबाव कारक के तहत,निम्न आर्थिक स्थिति,परिस्थितियों के कारण उन पर जिम्मेदारी थोप दी जाती है।जिस कारण महिलाएं विभिन्न व्यावसायिक कार्यों में मजबूरी वश संलग्न हो जाती है।। महिलाएं वित्तीय कठिनाइयों से उबरने के लिए व्यावसायिक उद्यम अपनाती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

- छोटे कस्बों में महिला उद्यमियों की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- महिला उद्यमिता के पीछे प्रेरक कारकों का विश्लेषण करना.
- महिला उद्यमियों की प्रमुख ताकत और कमजोरी तथा पर्यावरणीय अवसरों का विश्लेषण करना।
- महिला उद्यमियों के काम की मात्रा, भूमिका संघर्ष और पर्यावरण पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करना।

आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका

पारंपरिक समाज में महिलाओं का शासन स्वाभाविक रूप से परिवार तक ही सीमित था क्योंकि वह बच्चों को जन्म देने वाली जननी थी,, वह एक माँ और गृहिणी के रूप में अपने कर्तव्यों में व्यस्त थी। शहरीकरण, तकनीकी प्रगति, महिलाओं की शिक्षा आदि जैसे कई कारकों ने विकासशील देशों में इन पारंपरिक स्थितियों को गहराई से बदल दिया है I

आर्थिक विकास की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी को मुख्य रूप से विभिन्न खंडों में वर्गीकृत किया जा सकता है I जैसे कि संगठित क्षेत्र में रोजगार, असंगठित क्षेत्र में रोजगार, स्व-रोजगार और उद्यमी। कुछ अन्य रूप से इन्हें वर्गीकृत किया जा सकता है। परंपरागत, औद्योगिकरण एवं आधुनिक, औद्योगिकरण. ।अधिकांश का देखा गया है कि महिलाएं ऐसे उद्योगों को चयनित करती हैं जो की सरलता पूर्वक सुविधाजनक रूप से चलाई जा सके । ताकि वे आर्थिक लाभकारी रोजगार का संयोजन के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियां को तनावमुक्त पूर्ण कर सके।

महिला उद्यमिता के क्षेत्र में व्याप्त चुनौतियां व समस्याएं

महिला उद्यमिता को समाज के विभिन्न समस्याओं व चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिन्हें हम निम्न रूप में भी समझ सकते हैं

1. पितृ सत्तात्मक समाज की प्रधानता
2. उधमशील योग्यता का अभाव
3. पारिवारिक संघर्ष
4. विपणन की समस्याएं
5. ऋण सुविधाएं
6. कच्चे माल की कमी
7. प्रतिस्पर्धा
8. अपर्याप्त व्यवसाय कौशलों का ज्ञान
9. अशिक्षा व अज्ञानता
10. सामाजिक व सांस्कृतिक बाधाएं
11. वित्तीय समस्याएं

उक्त समस्याओं व चुनौतियों को हम विस्तार पूर्वक से निम्न प्रकार से समझ सकते हैं महिला उद्यमिता के विकास के बावजूद भी आज भी पुरुष प्रधान समाज का वर्चस्व सभी जगह पर विद्वान है भारत का संविधान दोनों लिंग को ज्ञानी पुरुष और महिला के बीच समानता के बारे में बात करता है लेकिन व्यवहारिक रूप में आज भी महिलाओं को कमजोर ही माना जाता है। जिस कारण से महिला उद्यमिता अपने व्यक्तित्व को स्वतंत्र रूप से स्वेच्छा से स्वीकार नहीं कर पाती है। किसी भी व्यवसाय का प्रमुख मापदंड उसमें जोखिम और अनिश्चितताओं को सहन करने की क्षमता होता है ।महिलाओं में आत्मविश्वास और आशावादी दृष्टिकोण की कमी होती है।जिसकी वजह से व्यवसायिक गतिविधियों,नवीन विचारधारा को अपनाने में सदैव स्वयं को अस्थल मानती है। जो कि उनकी प्रगति में बाधक सिद्ध होते हैं।

भारत जैसे विकासशील देश में महिला उद्यमियों का प्रतिनिधित्व अत्यंत कम है ।भारत में कीमत 14% उधमी महिलाएं हैं ।और सभी महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसाय में केवल 21प्रतिशत ही किसी भी प्रकार का ऋण या धन प्राप्त कर सकती है ।यह वास्तव में बड़ी चिंता का विषय है कि विभिन्न सामाजिक आर्थिक कारणों से भारत में महिलाएं सकल घरेलू उत्पाद में कीमत 70% योगदान दे सकती है। परन्तु जागरूकता के अभाव के कारण नहीं जिसके भाव में महिला उद्यमी अपनी महत्वाकांक्षाओं को स्वरुप प्रदान नहीं कर पाती हैं।वित्त को हर व्यवसाय उपक्रम का जीवन रक्त कहा जाता है चाहे वह बड़ा या छोटा उद्योग हो।अधिकांश महिला उद्यमियों को सर्वाधिक समस्या वित्त व्यवस्था की होती है क्योंकि उनके पास स्वयं की कोई भी संपत्ति व्यवसाय स्थापित करने के लिए नहीं होती । बैंक द्वारा उन पर विश्वास नहीं किया जाता है साथ ही उन्हें कम ऋणयोग्य माना जाता है।महिला उद्योग के लिए एक चुनौती पुरुष में या अन्य स्थापित समूह द्वारा स्थापित प्रतिस्पर्धा भी है। महिला उद्यमियों के पास अपने व्यवसाय के प्रचार प्रसार हेतु ज्ञान व धन का भाव होता है। साथ ही अपने माल उत्पादों का आसान विपणन नहीं कर पाती। उन्हें एक सीमित दायरे में ही रह कर अपने व्यवसाय को संचालित करना पड़ता है जो कि महिला उधमिता विकास की एक प्रमुख समस्या है।

उधमी महिलाओं में गतिशीलता का अभाव कई कारणों से देखने को मिलता है।पहला कारण पारिवारिक समस्याएं पारिवारिक जिम्मेदारियां, दूसरा कारण अधिकारियों एवं सहकर्मियों का संदेहास्पद रवैया मानसिक रूप से उन्हें काम में मजबूर और भावनात्मक बनाता है। जिसके कारण अधिकांश महिला उद्यमी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर अपने उत्पाद का प्रचार प्रसार करने को, उत्पादन बढ़ाने के प्रति अधिक उत्साहित नहीं होती है। पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं पारिवारिक प्रबंधक बाधा उत्पन्न करने वाला कारण होता है । अधिकांशतः विवाहित महिलाएं जिन्हें परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है, उनका व्यवसाय अन्य महिलाओं की अपेक्षा अधिक फलीभूत होता है ।और वह खुलकर अपने कौशल और आत्मविश्वास को अपने व्यवसाय के माध्यम से प्रदर्शित कर सकती हैं। पारिवारिक सदस्यों के समर्थन द्वारा महिलाओं में उत्साह जागरूक होता है ताकि विकास की गति को बढ़ाया जा सके।परंतु निराशावादी भावना पुरुष प्रधान समाज में महिला उद्योग की संभावना पर विराम लगाती है।

विकासशील समाज में विकास का एक आयाम आर्थिक अधिकारिता है। उधमशीलता के कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनका संचालन महिलाएं सफलता से करती आ रही है परंतु महिलाओं की आर्थिक संपन्नता और स्वतंत्रता की राह में कई समस्याएं हैं जैसे कि रोजगार का ना मिलना और मिलने पर भी उसकी मेहनत आना स्वरूप संडासी पूर्णता प्राप्त न होना। सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक नजरिया जो की महिलाओं के प्रति सदैव से द्विपक्षी रहा है। इनमें समाज द्वारा असहयोग भावना, पारिवारिक दायित्व का बोझ, जीवन साथी का असहयोगी रवैया होना ।इनके अलावा भी कुछ अन्य समस्याओं की श्रंखला हो सकती है जोकि महिलाओं के व्यवसाय की वृद्धि में रुकावट सिद्ध हो सकती है। सामाजिक प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी है जिसे समझने और मानसिक सोच को बदलने की अत्यंत आवश्यकता है। स्वयं की पहचान बनाने को आता महिलाएं छोटे रूप में ही परंतु निरंतर गतिमान होकर उधम क्षेत्र में स्वयं का परचम फैला रही है यह उधर छोटे हैं परंतु महिलाओं को स्वावलंबी और आपकी निर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रखते हैं। निश्चित ही भागीदारी आर्थिक विकास भी कारगर साबित होगी।

<u>शासन द्वारा महिला उद्यमियों को प्रदान किए जाने वाले अवसर एवं योजनाएं</u>

देश की आधी आबादी के उद्यमिता के क्षेत्र में रूझान हेतु शासन के द्वारा भी विभिन्न कार्यक्रमों को चलाया जा रहा है ।साथ ही उधमी महिलाओं हेतु विभिन्न रोजगार के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं ।सरकार द्वारा की जाने वाली यह पहल विगत काल से ही विभिन्न माध्यमों द्वारा की जा रही है

जिन्हें विस्तार पूर्वक निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

- लघु उद्योग विकास संगठन
- जिला उद्योग केंद्र
- उद्यमिता विकास संस्थान,
- युवा उद्यमियों का राष्ट्रीय गठबंधन,
- उद्यमिता और लघु व्यवसाय विकास के लिए राष्ट्रीय संस्थान
- भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक
- महिला उद्यमी निधि योजना

सूचीबद्ध विभिन्न संस्थानों के कार्यों की समीक्षा करने पर यह पाया गया कि ऐसी कोई विशेष संस्था नहीं है जो विशेष रूप से विभिन्न संस्थानों में महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित हो।हालाँकि, सामान्य उद्यमशीलता विकास और सहायता के लिए बनाई गई विभिन्न संस्थाएँ महिला उद्यमियों के लिए अलग योजना भी चला रही थीं हालाँकि लघु उद्योग क्षेत्रों में सामान्य उद्यमियों की तुलना में महिला उद्यमियों को अधिक ध्यान और अतिरिक्त रियायत मिलती है। भारत सरकार द्वारा स्टार्ट ऑफ इंडिया को विशेष विस्तृत करने हेतु 2016 से आने को कार्यक्रमों को प्रारंभ किया गया मिलाओ हेतु प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रमों को विशेष रूप से ग्रामीण आचल की महिलाओं हेतु चलाया गया ताकि यह महिलाएं स्वयं को आत्मनिर्भर बना सकें।

उप संहार

उपर्युक्त शोध पत्र के आधार पर यह कहा जा सकता है कि,महिलाओं की उधमशीलता परिवारों और समुदायों के आर्थिक कल्याण,गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण में योगदान दे सकती है। एक तरह से सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। सशक्तिकरण की अवधारणा एक ऐसी प्रक्रिया को परिभाषित करती है जिसमें महिलाओं को चुनने की आजादी प्राप्त होती है। वर्तमान समय में आवश्यकता है कि देश की आबादी आबादी को सशक्त बनाया जाए आर्थिक क्षेत्र में उनकी प्रतिभा एवं योग्यता को संवारा जाए ।महिला उद्यमी केवल स्वयं को आत्मनिर्भर बनती है बल्कि उसे क्षेत्र की महिलाओं पारिवारिक सदस्यों हेतु रोजगार के अवसर प्रदान करने में सहायक होती है या यूं कहें कि दूसरों को भी रोजगार के अवसर प्रदान करने में सहायक होती है सपने देखना वह उन्हें हासिल करना भी सफल उद्यमी की निशानी होती है जो की महिलाओं में सर्वाधिक पाई जाती है। आवश्यकता है कि अधिक से अधिक महिलाओं को नए उद्यम आरंभ करने हैं एवं संचालन करने की क्षमता को विकसित किया जाए ताकि वे उद्योग जगत का सूत्रधार और इंजन बनकर देश की आर्थिक विकास में निश्चित ही मिल का पत्थर साबित हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- R saraswat,R Latha bhavan.muktshabd journal,2020
- S tripathi -cities,2023, Elsevier.
- S K Dhamya-women entrepreneurs.
- Agarwal S and Lenka.U(2018,why reserch is needed in women entrepreneurs in India.
- D. L.Rani, महिला उद्यमिता
- R k gautam,KMishra-International journal of Applied Research,2016
- डॉ संघमित्रा, महिला उद्यमिता और आर्थिक विकास -एक अध्ययन , research journy international research journal.2013.
- Kamlesh Kumar Gupta,महिला सशक्तिकरण.